एकीकरण के सूत्रधार सरदार पटेल पर नई पुस्तक

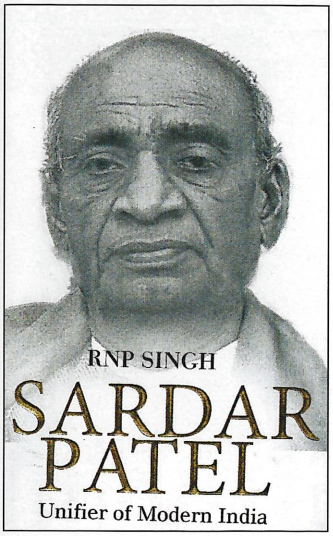

पुस्तक का शीर्षकः
सरदार पटेल, यूनिफायर ऑफ मॉडर्न इंडिया
लेखकः
आरएनपी सिंह
पृष्ठः 356
मूल्यः रु. 795
सर्वाधिकारः
विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन
प्रकाशकः वितस्ता पब्लिशिंग प्रा.लि., नई दिल्ली
समीक्षकः सुशील शर्मा

भारत की आजादी के साथ ही 1947 में अंग्रेजों द्वारा स्वतंत्र घोषित 554 रियासतों के पूर्व शासकों में से कई बड़े शासकों ने स्वयं को भारत या पाकिस्तान में शामिल न करते हुए आजाद देश घोषित किया था। इससे भारत के टुकड़ों-टुकड़ों में बिखरने का खतरा पैदा हो गया था। सौभाग्य से उस समय देश के उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल की सूझबूझ और अथक प्रयासों से सभी 554 रजवाड़ों को भारतीय संघ में जोड़ने और भारत को एक समग्र राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सफलता मिल गई। सरदार पटेल ने उस दौरान कैसे राजाओं, नवाबों आदि को भारत में शामिल किया, क्या रणनीति अपनाई, कैसे उनके विश्वस्त वी.पी.मेनन और अन्य लोगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, इन तमाम बातों को विस्तार से हाल में प्रकाशित पुस्तक 'सरदार पटेल, यूनिफायर ऑफ मॉडर्न इंडिया' में प्रस्तुत किया गया है। यूं तो पटेल पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं लेकिन थिंक टैंक विवेकानंद इंटरनेशल फाउंडेशन के सीनियर फेलो आर.एन.पी. सिंह द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में कई ऐसे तथ्यों का खुलासा किया गया है, जो सरदार पटेल की दूरदृष्टि और पैनी नजर की बानगी पेश करते हैं। पुस्तक में पटेल के 7 नवंबर, 1950 को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को लिखे उस पत्र को भी प्रकाशित किया गया है जिसमें उन्होंने चीन के प्रति उन्हें आगाह करते हुए लिखा था कि चीन का रवैया भारत के प्रति मित्रता का नहीं है बल्कि वह एक दुश्मन के रूप में उभर रहा है। पटेल ने उस पत्र में पाकिस्तान और चीन की ओर से पैदा होने वाले दो मोर्चों पर युद्ध की आशंका भी व्यक्त की थी। उन्होंने लिखा था, '... इस तरह सदियों बाद पहली बार भारत की सुरक्षा को एक साथ दो मोर्चों पर केन्द्रित करना होगा। अभी हमारे सुरक्षा उपाय सिर्फ पाकिस्तान पर ही हमारे भारी होने पर आधारित हैं। अब हमें अपनी सुरक्षा नीति उत्तर और पूर्वोत्तर में चीन को भी ध्यान में रख कर तय करनी होगी। एक कम्यूनिस्ट चीन जिसके स्पष्ट इरादे और उद्देश्य हैं, किसी भी तरह हमारे प्रति मित्रभाव नहीं रखेगा।' पत्र के इस अंश से स्पष्ट होता है कि पटेल कितने दूरद्रष्टा थे और चीन और पाकिस्तान की ओर से एक साथ दो मोर्चों पर युद्ध की जिस आशंका को उन्होंने 1950 में भांप लिया था, वह आज हमारे सामने चुनौती बनी खड़ी है।

पुस्तक में बताया गया है कि पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना, रजवाड़ों के चैंबर के अध्यक्ष और भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खान, हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली खान, जूनागढ़ के नवाब महाबत खान रसूलखानजी, त्रावणकोर के दीवान सर सी.पी.रामास्वामी आयंगर, अंग्रेज शासन के राजनीतिक विभाग के सचिव सर कोनरैड कोरफील्ड जैसे लोगों ने भारतीय संघ के खिलाफ जो कुचक्र रचा था, वह काफी घातक था।

पुस्तक में इन जैसे तमाम लोगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। मसलन, भोपाल के नवाब और हैदराबाद के निजाम ने किस तरह जिन्ना को न केवल भारत के खिलाफ हथियार खरीदने के लिए आर्थिक मदद दी, बल्कि जोधपुर के महाराजा को पाकिस्तान में शामिल करने के लिए एक खतरनाक षड्यंत्र रचा था जिसमें महाराजा हनवंत सिंह फंसते-फंसते बचे थे। जोधपुर को पाकिस्तान में शामिल होने से बचाने में पटेल के अलावा जोधपुर राज्य के प्रधानमंत्री सी.एस.वेंकटाचार, तत्कालीन गृह सचिव एचवीआर आयंगर, पटेल के विश्वस्त और आजादी के बाद रियासतों के मंत्रालय के सचिव वी.पी.मेनन आदि ने भी काफी अहम भूमिका निभाई थी। पुस्तक से पता चलता है कि आजादी के तुरंत बाद भारत किस तरह षड्यंत्रों और युद्ध के भंवरजाल में फंस गया था। पटेल ने ओडिशा समेत पूरे पूर्वोत्तर की रियासतों के अलावा हैदराबाद, त्रावणकोर जैसी दक्षिण की रियासतों को नरमी और जरूरत पड़ने पर सख्ती से भारतीय संघ में शामिल किया। पुस्तक में कई ऐतिहासिक पत्र और चित्र भी प्रकाशित किए गए हैं।

पुस्तक में कुछ रोचक प्रसंगों का भी जिक्र किया गया है। जूनागढ़ के नवाब को कुत्ते पालने का इतना शौक था कि उसने 800 कुत्ते पाल रखे थे और हर कुत्ते की देखभाल के लिए एक चाकर नियुक्त था। उसने एक बार अपने पालतू कुत्ते के एक जोड़े की शादी पर 20 लाख रुपये खर्च किए और अपनी रियासत में एक दिन की छुट्टी घोषित की! बाद में वह अपनी संपत्ति और कुत्तों के साथ पाकिस्तान भाग गया। इसी तरह हैदराबाद को शामिल करने के बाद वहां के तत्कालीन विदेश सचिव ने माउंटबेटन के साथ हुए समझौते को लागू करने की मांग की तो पटेल ने जवाब दिया, 'अब तो समझौता इंग्लैंड चला गया!' उनका आशय माउंटबेटन से था जो तब इंग्लैंड लौट गए थे।

आरएनपी सिंह की सरदार पटेल पर यह पुस्तक अत्यंत संग्रहणीय है। ●